शोध सारांश

मदरसा शिक्षा भारत समेत विश्व की प्राचीन शिक्षा पद्धति है। भारतीय जनसंख्या का एक महत्वपूर्ण हिस्सा मदरसे में शिक्षा प्राप्त करता है। मदरसा मुस्लिम शिक्षा के केंद्र होते हैं- इसके दो मुख्य अभिकरण होते हैं- मकतब तथा मदरसा। मकतब में प्रारम्भिक शिक्षा दी जाती है तथा मदरसों में उच्च शिक्षा प्रदान की जाती हैं। ये प्रायः दो अर्थों में लिए जाते हैं सामान्य अर्थ में विद्यालय तथा दूसरे अर्थ में एक ऐसा शिक्षा संस्थान जो धार्मिक शिक्षा प्रदान करता है, परंतु यह केवल कुरान और हदीस तक ही सीमित नहीं। अतः हम कह सकते हैं कि मदरसा एक ऐसा शिक्षा संस्थान है जो धार्मिक तथा धर्मनिरपेक्ष दोनों ही प्रकार की शिक्षा प्रदान करता है। आज़ादी से पूर्व मदरसा में धार्मिक एवं धर्मनिरपेक्ष दोनों प्रकार की शिक्षा की व्यवस्था थी। भारत के प्रथम शिक्षा मंत्री मौलाना अब्दुल कलाम आज़ाद एवं मौलाना स्ययद अब्दुल हसन आली नदवी आदि नेता मदरसे के ही उपज थे। परंतु धीरे-धीरे मदरसे की गुणवत्ता कम होने लगी पहले जहां मदरसे में धार्मिक तथा धर्मनिरपेक्ष दोनों ही प्रकार की शिक्षा दी जाती थी अब उसमें केवल धार्मिक शिक्षा पर ही ज़ोर दिया जाने लगा। धार्मिक शिक्षा पर ज़ोर देने का कारण 1836 में अंग्रेज़ी सरकार द्वारा मैकाले शिक्षा पद्धति लागू किए जाने के बाद हुआ क्योंकि मुसलमानों को यह डर था कि उनकी सभ्यता और संस्कृति नष्ट हो रही है तो वे धार्मिक शिक्षा पर ज़्यादा ज़ोर देने लगे। इससे यह हुआ कि मदरसे की गुणवत्ता को नुकसान पहुंचा। जिस समाज में इसके प्रति रुतबा भी कम हो गया। गुणवत्ता कम होने की वजह से विद्यार्थी यहाँ शिक्षा ग्रहण करने आते हैं परंतु अधिकांश विद्यार्थी गरीब घर से आते हैंक्योंकि यहाँ उन्हें निःशुल्क शिक्षा के साथ ही भोजन और आवास की सुविधा भी उपलब्ध होती है यहाँ पढ़ाने वाले अधिकांश शिक्षक भी अप्रशिक्षित होते हैं। साथ ही परंपरागत शिक्षण प्रणाली जारी है। वर्तमान में शिक्षा समय के साथ परिवर्तित हो रही है नयी-नयी शिक्षण पद्धति, नवाचार एवं शिक्षण अधिगम सामग्री का प्रयोग किया जा रहा है तो मदरसा शिक्षा किस हद तक इस आधुनिक शिक्षा के अनुरूप है एवं साथ ही नवाचार के प्रति मदरसा के शिक्षक एवं विद्यार्थी क्या अभिवृत्ती रखते हैं और क्या वजह है कि यह अभी भी मुख्यधारा में नहीं आ पायी है। अतः प्रस्तुत शोध का उद्देश्य मदरसे की शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का अध्ययन करना है।

शोध उद्देश्य

- मदरसा शिक्षा व्यवस्था में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का अध्ययन करना।
- मदरसे की शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में शिक्षक-छात्र अन्तः क्रिया का अध्ययन करना।
- मदरसा शिक्षा में नवाचार के प्रति शिक्षक एवं विद्यार्थी की अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
- मदरसा शिक्षा व्यवस्था में गुणात्मक सुधार हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

जनसंख्या

प्रस्तुत शोध कार्य में जनसंख्या के रूप में उत्तर प्रदेश राज्य के वाराणसी जिले के समस्त मदरसे के कक्षा 6 के विद्यार्थी तथा शिक्षकों को सम्मिलित किया गया।

प्रतिदर्श एवं प्रतिदर्शन

प्रस्तुत लघु-शोध में प्रतिदर्श चयन अथवा प्रतिदर्शन हेतु सह-उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्शन प्रविधि का उपयोग किया गया है। प्रस्तुत लघु शोध हेतु मदरसा गौसीय के कक्षा 6-(अ) के समस्त विद्यार्थी एवं उनको पढ़ाने वाले शिक्षकों को प्रतिदर्श के रूप में चुना गया है।

उपकरण

प्रस्तुत लघु शोध कार्य हेतु शोधार्थी द्वारा समस्या से संबन्धित कोई उपकरण उपलब्ध नहीं पाया गया। उपकरण की अनुपलब्धता के कारण शोधार्थी द्वारा स्वयं निर्देशक के निर्देशन में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया अवलोकन अनुसूची, शिक्षक-छात्र अन्तः क्रिया अवलोकन अनुसूची तथा शिक्षक एवं विद्यार्थी की नवाचार के प्रति अभिवृत्ति जानने हेतु अभिवृत्ति मापनी जिसका निर्माण पाँच बिन्दु लिकर्ट विधि का निर्माण किया गया है।

आंकड़ो का संग्रहण

प्रस्तुत लघु शोध में गुणात्मक आंकड़ों के संग्रहण हेतु सहभागी अवलोकन विधि का प्रयोग किया गया एवं मात्रात्मक आंकड़ों के संग्रहण के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

आंकड़ों का विश्लेषण

प्रस्तुत लघु शोध में सहभागी अवलोकन द्वारा संग्रहीत आंकड़ों का विश्लेषण विषय वस्तु विश्लेषण के माध्यम से किया गया एवं सर्वेक्षण विधि द्वारा एकत्रित आंकड़ों का विश्लेषण मध्यमान, मानक विचलन एवं प्रतिशत के माध्यम से किया गया।

अध्ययन के मुख्य परिणाम

आंकड़ो के विश्लेषण के आधार पर मुख्य परिणाम प्राप्त हुए:

- मदरसे की शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया हेतु सहभागी अवलोकन के उपरांत पाया गया कि मदरसे के शिक्षकों को विषय वस्तु का पूर्ण ज्ञान नहीं था।
- शिक्षक बिना पाठ्ययोजना के शिक्षण कार्य करते थें।
- शिक्षक अपनी कक्षाए नियमित रूप से संचालित करते थें।
- शिक्षक के शिक्षण उद्देश्य एवं विषय वस्तु की प्रस्तुति में कोई संतोषजनक संबंध नहीं था॥
- अधिकांश शिक्षकों को अधिगमकर्त्ता के ज्ञान के स्तर के बारें में पूर्ण ज्ञान नहीं था॥
- कुछ शिक्षक शिक्षण-सहायक सामग्री को प्रभावशीलता के साथ प्रस्तुत नहीं कर पाते थें।
- अधिकांश शिक्षक विद्यार्थी को पाठ्य में संलग्न रख पाते थें।
- शिक्षक एवं विद्यार्थी के बीच संतोषजनक अन्तः क्रिया हो रही थी। शिक्षक विद्यार्थी के प्रति स्नेह रखते थें।
- कुछ शिक्षक विषय से संबंधितउचित उदाहरण नहीं पेश कर पाते थें।
- शिक्षक व्यक्तिगत विभिन्नता को शिक्षण कार्य में महत्व नहीं देते थें।
- कक्षा की भौतिक स्थिति संतोषजनक नहीं थी।
- अधिकांश विद्यार्थियों में स्वयं की अवधारणा बोध करने की क्षमता नहीं थी।
- विद्यार्थी एवं शिक्षक एक दूसरेका सम्मान करते थें।
- अधिकांश विद्यार्थी कक्षा में स्वतंत्र रूप से अपनी प्रतिक्रिया दे रहें थें।
- नवाचार के प्रति शिक्षक एवं विद्यार्थी की अभिवृत्ति केवल उच्च एवं मध्यम स्तर की ही पाई गई थी।

***